



समाज विकासमाला

कबीर के बोल

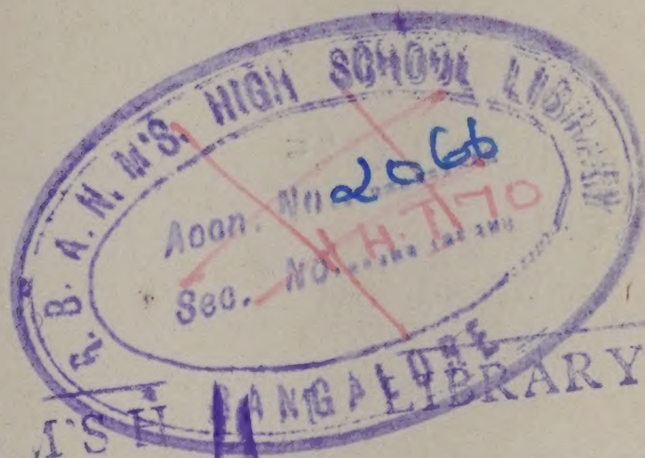
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ६

कबीर के बोल

●

संग्राहक
अशोक



●

सम्पादक
यशपाल जैन

●

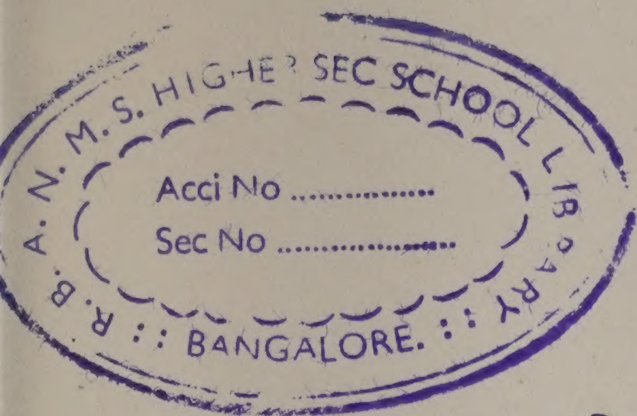
१९५८

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

चौथी बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
रामा कृष्णा प्रेस,
दिल्ली





समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

चौथा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का चौथा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

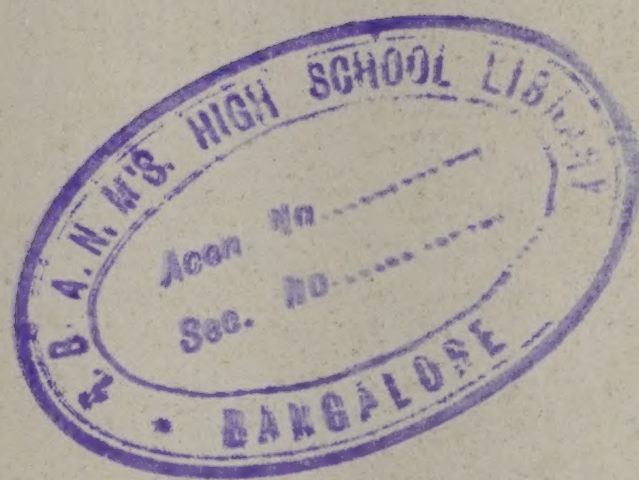
पाठकों से

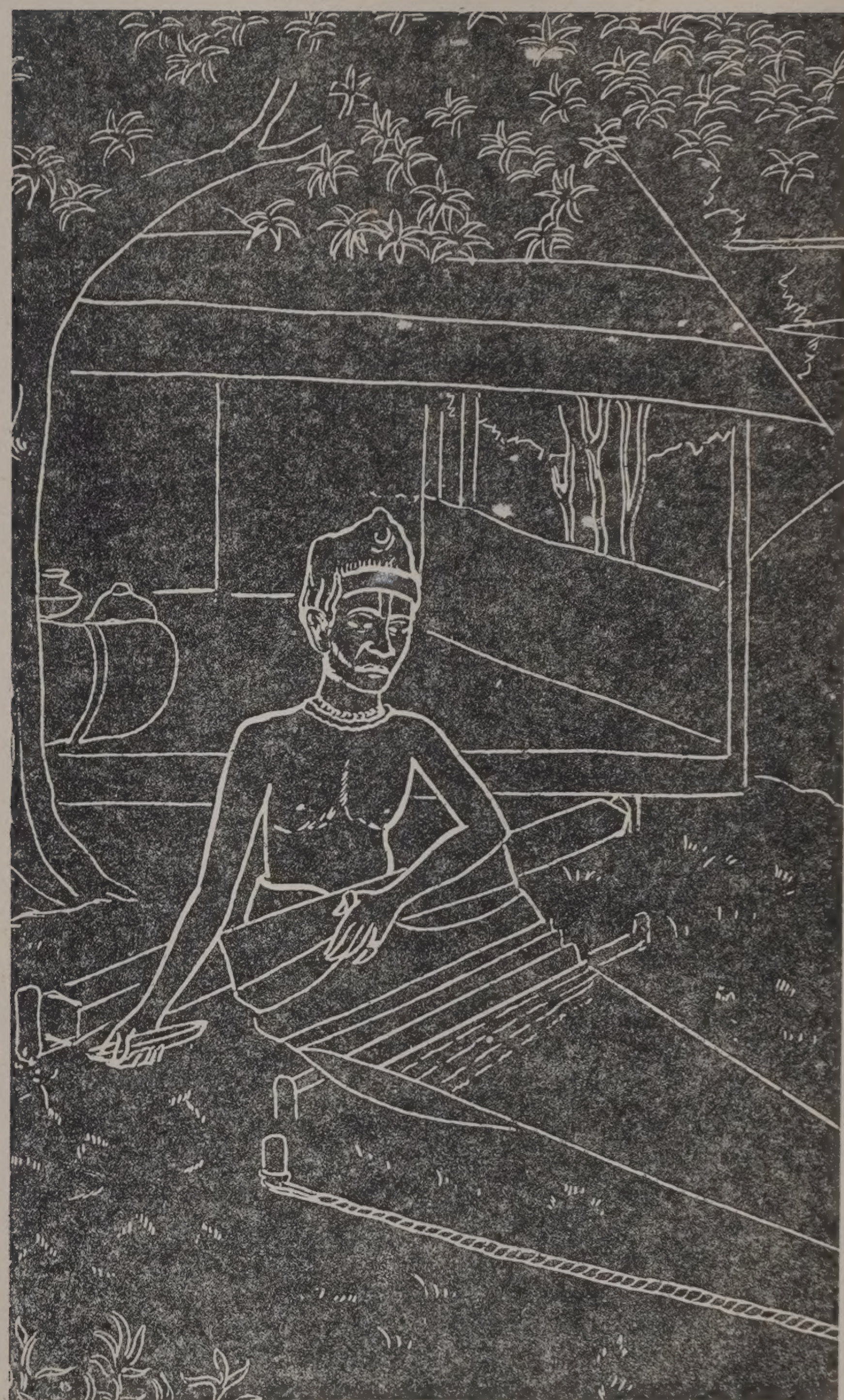
हमारे देश में बहुत-से संत हुए हैं। कबीर उन्हीं में से हैं। भारत का शायद ही कोई ऐसा पाठक हो, जिसने उनका नाम न सुना हो। वह जाति के जुलाहे थे, कपड़ा बुनने का धंधा करते थे; लेकिन ज्ञान की उन्होंने ऐसी बातें कही हैं जो कभी भुलाई नहीं जा सकतीं। उनकी भाषा सीधी-सादी है और गहरी-से-गहरी बात भी उन्होंने इस ढंग से कह दी है कि बिना पढ़ा-लिखा या कम पढ़ा-लिखा भी आसानी से समझ सकता है।

इस किताब में बताया गया है कि कबीर कौन थे। साथ ही उनके कुछ चुने हुए दोहे भी दिये गए हैं। बहुत-से दोहे तो ऐसे हैं जो आपको याद होंगे। बाकी के भी याद करने के हैं। आप उन्हें अवश्य याद करें, दूसरों को भी करवायें।

इस किताब में जो साखियां दी गई हैं, वे 'संत-सुधा-सार', 'कबीर-बचनावली' और 'कविता-कौमुदी' में से ली गई हैं।

—संपादक





संत कबीर

कबीर के बोल

: १ :

कबीर कौन थे ?

उत्तर भारत में ऐसे बहुत कम लोग होंगे जो कबीर का नाम न जानते हों। भारत के संतों में इनका नाम सूरज के समान चमकता है।

ये जाति के जुलाहे थे। कहते हैं कि आज से कोई ५५५ बरस पहले काशी के पास एक तालाब के किनारे नीरू नामक जुलाहे को एक बालक पड़ा मिला। उसने स्नेह से उस अनाथ बालक को उठा लिया और पाल-पोसकर बड़ा किया। यही बालक बड़ा होने पर कबीर के नाम से मशहूर हुआ।

कबीर बचपन से ही बड़े धरम-करमवाले थे। कहते हैं कि बड़े होने पर स्वामी रामानंदजी को इन्होंने अपना गुरु बना लिया और उनसे राम-नाम का मंत्र लिया।

कबीर बड़े सुशील और सदाचारी थे। पढ़े-लिखे नहीं थे, पर सत्संगी थे। सत्संग से ही उन्होंने हिंदू-

धर्म की गूढ़ बातें जान लीं। वह सत्य के बड़े पक्षपाती थे। सत्य के खिलाफ जो उनको दिखाई देता था, उसका जोरों से खंडन करने लगते थे।

कबीर का हिंदू और मुसलमान दोनों पर प्रभाव था। उनकी लगन और प्रेम की बातें सुनने को दोनों धर्म के लोग आया करते थे और दोनों धर्म के लोगों को वह ज्ञान और उपदेश की बातें सुनाया करते थे।

कबीरसाहब के बारे में कई बातें कही जाती हैं। कहते हैं, एक दिन वह एक थान बुनकर बाजार में बेचने के लिए निकले। रास्ते में एक साधु मिला। उसने कबीरसाहब से कहा, "बाबा, कुछ दे।" कबीरसाहब ने आधा थान फाड़कर उसे दे दिया।

"पर इतने से काम नहीं चलेगा।" साधू ने कहा।

कबीरसाहब ने यह सुनकर बाकी का आधा थान भी दे दिया और खुशी-खुशी घर लौट आये।

एक बार की बात है कि कबीर साहब के यहां कुछ फ़कीर आये। उनके लिए भोजन की व्यवस्था करनी थी; पर उस दिन उनके यहां खाने को कुछ था नहीं। रुपया-पैसा भी कुछ नहीं था। वह बड़े घबराये कि इन फकीरों को भोजन किस प्रकार कराया जाय!

उनकी पत्नी लोई बोली, "एक उपाय हो सकता है।" कबीर ने पूछा, "सो क्या ?" वह बोली, "आप कहें तो एक साहूकार के लड़के से कुछ रुपये ले आऊं। उसकी मुझपर आंख है। मैं पहुंची नहीं कि उसने रुपये दिये नहीं।" और कोई चारा न देख कबीर ने कहा—जाओ ले आओ। लोई साहूकार के बेटे के पास गई और उसने अपनी जरूरत बताई। साहूकार के बेटे ने रुपये दे दिये। उसके बाद उसने अपनी इच्छा पूरी करने को कहा तो लोई रात में मिलने का वादा करके चली आई।

दिन फकीरों को खाना खिलाने में बीत गया। उस दिन बारिश भी होने लगी। रात अंधेरा काफी था। लोई ने कबीर को सारी बातें बता दी थीं। इससे कबीरसाहब को भी चैन न था। वह सोचते थे कि लोई अगर वचन-पालन के लिए साहूकार के बेटे के पास न जा सकी तो बुरा होगा। जिसकी बात गई, उसका सब गया। उन्होंने बारिश की परवा न की, कम्बल ओढ़ाकर लोई को पीठ पर उठाया और साहूकार के यहां पहुंचे। खुद बाहर खड़े रहे और लोई अंदर चली गई। वह युवक तो राह देख ही रहा था। लोई को आया देखकर बड़ा खुश हुआ। पर उसे यह देखकर अचरज

हुआ कि बारिश होते रहने पर भी लोई के न तो कपड़े ही भीगे हुए हैं और न पैरों में कीचड़ लगा है। उसने पूछा कि ऐसा क्यों है? लोई ने सारी बात सच-सच बता दी। सुनकर साहूकार का बेटा बड़ा शर्मिंदा हुआ और उसे बड़ा पछतावा हुआ। वह लोई के पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा, "तुम तो मेरी मां हो।" इसके बाद वह कबीरसाहब के पास पहुंचा और उनके पैरों में लिपटकर माफ़ी मांगने लगा। उस दिन से वह उनका भक्त बन गया।

कहते हैं, उस समय के शासक सिकंदर लोदी ने इनकी भक्ति-रस भरी और अपनेको 'राम' बताने वाली चर्चाएं सुनकर अपने यहां बुलाया और आग में जला डालने की कोशिश की; लेकिन भगवान की कृपा से इनका बाल भी बांका नहीं हुआ। उसी प्रकार एक बार एक पागल हाथी के सामने इनको फेंक दिया गया, पर वहां भी ये बच गये।

ज्ञान और भक्ति की सतत साधना करते हुए भी उन्होंने अपना घरेलू धंधा नहीं छोड़ा। कपड़ा बुनते समय भी उनकी लौ राम से लगी रहती थी।

उनके जीवन का लगभग सारा समय काशी नगर में बीता; पर मृत्यु से पहले वह मगहर चले गये।

कहा जाता है कि काशी में प्राण छोड़ने से मुक्ति मिलती है और मगहर में मरने से नरक। पर कबीरसाहब इस अंध-धारणा के कायल नहीं थे। उन्होंने कहा—

जो कासी तन तजै कबीरा।
तो रामहि कौन निहोरा ?

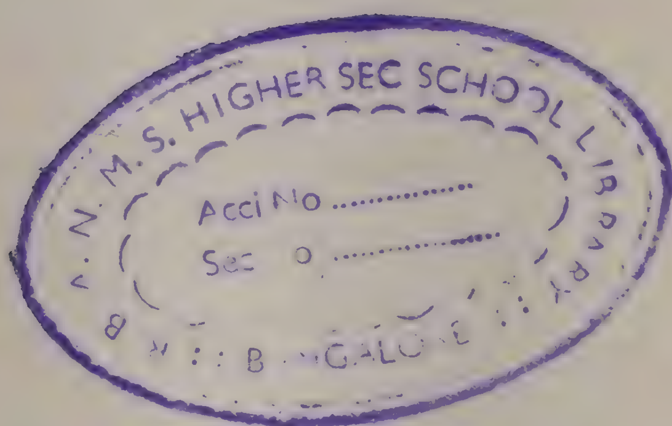
इस प्रकार मगहर में कबीरसाहब का देहांत हुआ।

कहते हैं कि मगहर में कबीरसाहब के हिंदू और मुसलमान शिष्यों में उनके शव को लेकर झगड़ा खड़ा होगया। मुसलमान उसे दफ़नाना चाहते थे और हिंदू दाह-संस्कार करना चाहते थे; मगर जब कफ़न उठाकर देखा तो वहां कबीरसाहब का शव नहीं था, उसकी जगह फूलों का ढेर था। हिंदू और मुसलमानों ने फूलों को आधा-आध बांट लिया और अपने-अपने रिवाज के अनुसार अंतिम संस्कार किया।

कबीरसाहब की जीवन-कथा जैसी अलौकिक है, वैसी ही उनकी बानी, उनके बोल भी अलौकिक हैं। उन्होंने जो कहा, अनूठा कहा, किसीका जूठा नहीं कहा। उन्होंने शब्द, साखियां, बानियां, रमैनो आदि बहुत-कुछ लिखे। पर आम लोगों के लिए उनकी साखियां (दोहे) जितनी प्रचलित और उपदेश-प्रद हैं, उतनी और कोई चीज़ नहीं। उनमें बड़ी-से-बड़ी ज्ञान की बात बहुत ही

सरल ढंग और भाषा में कही गई है। उन्होंने बताया है कि दूसरों की भलाई करो, सच बोलो, प्यार से रहो, घमंड मत करो, यह शरीर पानी के बुलबुले की तरह है। इसे भगवान का नाम लेने और अच्छे-अच्छे काम करने में लगाओ। अपनी बात समझाने के लिए उन्होंने ऐसी उपमाएं दी है कि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। उससे मालूम होता है कि उन्होंने जो-कुछ लिखा है, वह सबके लिए लिखा है।

उनकी चुनी हुई साखियां आगे दी जाती हैं।



कबीर की साखी

सुख में सुमिरन ना किया, दुख में कीया याद ।
कह कबीर ता दास को, कौन सुने फ़रियाद ।।

यह तन काचा कुंभ[१] है, लियां फिरै था साथि ।
ढबका लागा फूटि गया, कछू न आया हाथि ।।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात ।
देखत ही छिप जायगा, ज्यों तारा परभात[२] ।।

आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत[३] ।
अब पछतावा क्या करै, चिड़ियां चुग गई खेत ।।

माटी कहे कुम्हार को, तू क्या रूंदे मोहिं ।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रूंदूंगी तोहिं ।।

आये हैं सो जायंगे, राजा रंक[४] फकीर ।
इक सिंघासन चढ़ि चले, इक बंधि जात जंजीर ।।

चलती चक्की देखिके, दिया कबीरा रोय ।
दुइ पट भीतर आयके, साबित गया न कोय ।।

मनके हारे हार है, मनके जीते जीत ।
कह कबीर पिउ[५] पाइये, मनहीं की परतीत[६] ।।

---

१. कच्चा घड़ा २. सवेरे ३. प्रीति ४. गरीब ५. प्रीतम, प्रभु ६. विश्वास

पर नारी पैनी छुरी, मति कोइ लावो अंग ।
रावन के दस सिर गये, परनारी के संग ।।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके हिरदै सांच है, ता हिरदै गुरु आप ।।

कबीरा संगत साधु की, हरे और की ब्याधि ।
संगत बुरी असाध की, आठों पहर उपाधि ।।

तोहिं पीर जो प्रेम की, पाका सेती खेल[१] ।
कांचो सरसों पेरिकै, खाली भया न तेल ।।

केरा तबहि न चेतिया, जब ढिग लागी बेर ।
अबके चेते क्या भया, कांटन लीन्हों घेर ।।

जांनि बूझि सांचहि तजैं, करैं झूंठ सूं नेहु ।
ताकी संगति राम जी, सुपिनैं ही जिनु देहु ।।

साध कहावन कठिन है, लंबा पेड़ खजूर ।
चढ़ै तो चाखै प्रेम रस, गिरै तो चकनाचूर ।।

गांठी दाम न बांधई, नहिं नारी सों नेह ।
कह कबीर तां साध की, हम चरनन की खेह[२] ।।

बृक्ष कबहुं नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर ।
परमारथ कै कारने, साधुन धरा सरीर ।।

१. पक्के साधु की संगति कर २. धूल

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ग्यान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥

जिहिं घर साध न पूजिये, हरि की सेवा नांहिं ।
ते घर मड़हट[1] सारषे, भूत बसैं तिन मांहि ॥

मन दीया कहिं और ही, तन साधन के संग ।
कह कबीर कोरी गजी, कैसे लागे रंग ॥

ऐसी बांणी बोलिये, मन का आपा[2] खोइ ।
अपना तन सीतल करै, औरन कूं सुख होइ ॥

जो तोको कांटा बुवे, ताहि बोव तू फूल ।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल ॥

दुरबल को न सतांइये, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की स्वांस से, लोह भस्म ह्वै जाय ॥

या दुनिया में आइ के, छांड़ि देइ तू ऐंठ ।
लेना होय सो लेइले, उठी जात है पैंठ ॥

आवत गारी[3] एक है, उलटत होय अनेक ।
कहत कबीर न उलटिये, वही एक ही एक ॥

मांगन मरन समान है, मत कोई मांगो भीख ।
मांगन ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख ॥

---

१. मरघट २. घमंड ३. गाली

उदर[१] समाता अन्न लै, तनहि समाता चीर ।
अधिकहि संग्रह ना करै, ताका नाम फकीर ।।

बोलत ही पहचानिये, साहु चोर को घाट ।
अंतर[२] की करनी सबै, निकसै मुख की बाट ।।

न्हाए धोए क्या भया, जो मन मैल न जाय ।
मीन[३] सदा जल में रहै, धोए बास[४] न जाय ।।

सांई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय ।।

सांई मेरा बांणिया, सहजि करै व्यौपार ।
बिन डांडी बिन पालड़ै[५], तोले सब संसार ।।

जाको राखै सांइयां, मारि न सक्कै कोय ।
बाल न बांका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

रोड़ा भया तो क्या भया, पंथी को दुख देय ।
साधू ऐसा चाहिए, ज्यों पैंडे की खेह ।।

खेह भई तो क्या भया, उड़ि-उड़ि लागे अंग ।
साधू ऐसा चाहिए, जैसे नीर निपंग[६] ।।

नीर भया तो क्या भया, ताता सीरा जोय ।
साधू ऐसा चाहिए, जो हरि जैसा होय ।।

---

१. पेट २. हृदय ३. मछली ४. बदबू ५. पलड़ा ६. स्वच्छ

हरि भया तो क्या भया, करता हरता होय ।
साधू ऐसा चाहिए, हरिभज निरमल होय ॥

निरमल भया तो क्या भया, निरमल मांगै ठौर ।
मल निरमल से रहित है, ते साधू कोई और ॥

प्रेम न खेतौं नीपजै, प्रेम न हाटि[१] बिकाइ ।
राजा परजा जिह रुचै, सिर दे सो ले जाइ ॥

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय ।
जैसे बाती दीप को, कटि उजियारा होय ॥

तीर तुपक[२] से जो लड़ै, सो तो सूर[३] न होय ।
माया तजि भक्ती करै, सूर कहावै सोय ।

जो ऊग्या[४] सो आंथिवै,[५] फूला सो कुमिलाइ ।
जो चिणियां[६] सो ढहि परै, जो आया सो जाइ ॥

पात पड़ंता[७] यों कहैं, सुनि तरवर बनराइ[८] ।
अबके बिछुड़े नां मिलैं, कहिं दूर पड़ैंगे जाइ ॥

कबीर कहा गरबियौ,[९] काल गहै कर केस ।
नां जांणै कहं मारिसी, कै घर कै परदेस ॥

हंसा बगुला एक सा, मानसरोवर मांहि ।
बगा[१०] ढंढौरे[११] माछरी, हंसा मोती खांहि ॥

---

१. बाजार २. तोप ३. वीर ४. पैदा हुआ ५. अस्त होगा ६. चिना गया
७. पड़ा हुआ ८. जंगल का पेड़ ९. घमंड करना १०. बगुला ११. ढूंढ़े

चंदन गया बिदेसड़े, सब कोई कहै पलास ।
ज्यों-ज्यों चूल्है झोंकिया, त्यों-त्यों अधकी बास ।।

निंदक नेड़ा[१] राखिये, आंगन कुटी बंधाइ ।
बिन साबण पाणीं बिना, निरमल करै सुभाइ ।।

कबीर आप ठगाइयै, और न ठगिये कोइ ।
आप ठग्यां सुख ऊपजै, और ठग्यां दुख होइ ।।

निंदक एकहु मत मिलै, पापी मिलौ हजार ।
इक निंदक के सीस पर, कोटि पाप को भार ।।

अवगुन मेरे बापजी, बकस[२] गरीब-निवाज[३] ।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता कों लाज ।।

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर ।।

तुम तो समरथ[४] सांइयां, दृढ़ करि पकरो बांहि ।
धुरही[५] लै पहुंचाइयो, जनि छांड़ौ मग[६] मांहि ।।

तरवर सरवर[७] संतजन, चौथे बरसे मेंह ।
परमारथ[८] के कारने, चारौं धारैं देह ।।

कबिरा मैं तो तब डरौं, जो मुझ ही में होय ।
मीच[९] बुढ़ापा आपदा,[१०] सब काहू में सोय ।।

---

१. पास २. क्षमा करना ३. दीनदयालु ४. समर्थ ५. अंत तक
६. रास्ता ७. तालाब ८. परोपकार ९. मौत १०. संकट

देह धरे का दंड है, सब काहू को होय।
ग्यानी भुगतै ग्यान करि, मूरख भुगतै रोय॥
मानुष तेरा गुण बड़ा, मांस न आवे काज।
हाड़ न होते आभरण,[1] त्वचा[2] न बाजै बाज॥
एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
जो तू सेवै मूल[3] कौ, फूलै फलै अघाय[4]॥
सब काहू का लीजिये, सांचा शब्द निहार।
पच्छपात[5] ना कीजिये, कहै कबीर विचार॥
करता[6] केरे बहुत गुण, औगुण कोई नांहि।
जो दिल खोजौं आपणां, तौ सब औगुण मुझमांहि॥
हीरा पड़ा बाजार में, रहा छार[7] लपटाय।
बहुतक मूरख चलि गये, पारखि[8] लिया उठाय॥
नाम रतनधन[9] संत पहं, खान खुली घट[10] मांहि।
सेंतमेंत[11] हौं देत हौ, गाहक कोई नांहि॥
एक कर्म है बोवना, उपजै बीज बहूत।
एक कर्म है भूंजना, उदय न अंकुर सूत॥
कबिरा सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर-पीर न जानई, सो काफिर[12] बे-पीर॥

---

१. गहने २. खाल ३. जड़ ४. अच्छी तरह ५ तरफदारी
६. पैदा करनेवाले ७. धूल ८. जौहरी ९. रत्नधन १० हृदय
११. मुफ्त १२. नास्तिक

तरवर तास बिलंबिये,[१] बारह मास फलंत ।
सीतल छाया, गहर फल, पंषी केल[२] करंत ॥

मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक ।
जो मन पर असवार है, सो साधू कोई एक ॥

आधी अरु रूखी भली, सारी सों संताप[३] ।
जो चाहेगा चूपड़ी, बहुत करेगा पाप ॥

रूखा सूखा खाइकै, ठंडा पानी पीव ।
देखि बिरानी चूपड़ी, मत ललचावे जीव ॥

खुस खाना है खीचरी, मांहि परा टुक[४] नौन ।
मांस पराया खायकर, गरा[५] कटावै कौन ॥

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो बकरी को खात है, ताको कौन हवाल ॥

मूरख को समझावते, ज्ञान गांठि को जाय ।
कोइला होय न ऊजरो, नौ मन साबुन लाय ॥

समझा समझा एक है, अनसमझा सब एक ।
समझा सोई जानिये, जाके हृदय विवेक ॥

बोली एक अमोल[६] है, जो कोई बोलै जानि ।
हिये[७] तराजू तौलिकै, तब मुख बाहर आनि ॥

---

१. लगाइये २. किलोल ३. दुःख ४. थोड़ा
५. गला ६. कीमती ७. हृदय

फूटी आंख बिबेक की, लखै न संत असंत।
जाके संग दस बीस हैं, ताको नाम महंत ॥

सांचे स्राप[१] न लागई, सांचे काल न खाय।
सांचे को सांचा मिलै, सांचे मांहि समाय ॥

साईं से सांचा रहौ, सांईं सांच सुहाय।
भांवै लंबे केस रख, भांवै घोट मुंडाय ॥

दया कौन पर कीजिये, कापर निर्दय होय।
सांईं के सब जीव हैं, कोरी[२] कुंजर[३] दोय ॥

लघुता[४] ते प्रभुता[५] मिलै, प्रभुता[६] से प्रभु दूरि।
चींटी लै शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि ॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजों आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥

सबतें लघुताई भली, लघुता तें सब होय।
जस दुतिया[७] को चंद्रमा, सीस नवै सब कोय ॥

दीन[८] लखे[९] मुखसबन को, दीनहिं लखै न कोय।
भली बिचारी दीनता, नरहुं[१०] देवता होय ॥

मरि जाऊं मांगूं नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारने, मोहिं न आवै लाज ॥

---

१. शाप २. चींटी ३. हाथी ४. छोटे ५. बड़प्पन
६. अभिमान ७. दूध ८. गरीब ९. देखता है १०. मनुष्य भी

गोधन[१] गजधन[२] बाजधन[३] और रतनधन[४] खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान ।।

मांगन गये सो मरि रहे, मरें सो मांगन जांहि।
तिनसे पहले वे मरे, होत करत जो नांहि ।।

चाह गई चिंता मिटी, मनुवा बेपरवाह ।
जिनको कछू न चाहिए, साई साहंसाह[५] ।।

हाड़ बड़ा हरि भजन कर, द्रव्य[६] बड़ा कछु देय।
अकल बड़ी उपकार[७] कर, जीवन का फल येह ।।

जा जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यहि सज्जन कौं काम ।।

जहां दया तहं धर्म है, जहां लोभ तहं पाप।
जहां क्रोध तहं काल है, जहां छिमा[८] तहं आप ।।

छिमा बड़न को चाहिए, छोटन को उतपात[९] ।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात ।।

सीलवंत[१०] सब तें बढ़ा, सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि ।।

आसन मारै क्या भया, मुई[११] न मन की आस।
ज्यौं तेली के बैल को, घर ही कोस पचास ।।

---

१. गाय २. हाथी ३. घोड़े ४. हीरे-जवाहरात ५. बादशाह
६. धन ७. भलाई ८. क्षमा ९. शैतानी १०. शीलवान ११. मरी

जहं आपा[१] तहं आपदा[२], जहं संसय[३] तहं सोग[४] ।
कह कबीर कैसे मिटैं, चारों दीरघ[५] रोग ।।

प्रभुता को सब कोइ भजै, प्रभु को भजै न कोय ।
कह कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी[६] होय ।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी[७] को छाया नहीं, फल लागै अति दूर ।।

मान बड़ाई जगत में, कूकर[८] की पहिचान ।
मीत[९] किये मुख चाटही, बैर किये तन हानि ।।

कुटिल[१०] बचन सबसे बुरा, जारि करै तन छार ।
साध बचन जल रूप है, बरसै अमृत धार ।।

पंडित और मसालची, दोनों सूझै नाहिं ।
औरन को कर चांदना, आप अंधेरे माहिं ।।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ[११], पंडित हुआ न कोय ।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय ।।

करता था सो क्यों किया, अब करि क्यों पछिताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय ।।

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर ।
स्रबन[१२] द्वार है संचरै, सालै[१३] सकल[१४] सरीर ।।

---

१. घमंड २. मुसीबत ३. संदेह ४. शोक ५. बड़े ६. दासी ७. राही ८. कुत्ता
९. दोस्ती १०. बुरा ११. मर गया १२. कान १३. दुःख दे १४. सारा

जैसा अनजल खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी[१] सोय॥

गारी ही सों ऊपजै, कलह कष्ट औ मीच।
हारि चलै सो साधु है, लागि मरै सो नीच॥

जग में बैरी कोइ नहिं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दै, दया करै सब कोय॥

कबीर जंत्र[२] न बाजई, टूटि गये सब तार।
जंत्र बिचारा क्या करै, चला बजावण हार॥

हम जानैं थे खायंगे, बहुत जमीं बहु माल।
ज्यों का ज्यों ही रह गया, पकरि ले गया काल॥

मालन आवत देखि करि, कलियां करी पुकार।
फूले फूले चुनि लिये, कालिह हमारी बार॥

इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिं।
घर की नारी को कहै, तन की नारी[३] जाहिं॥

मनिषा जनम दुलभ[४] है, देह न बारंबार।
तरवर थैं फल झड़ि पड्या, बहुरि[५] न लागै डार॥

कबीर यहु तन जात है, सकै तो ठाहर लाइ।
कै सेवा करि साध की, कै गोविंद गुन गाइ॥

---

१. वाणी २. यंत्र ३. नाड़ी ४. कठिन ५. फिर

कबिरा गरब न कीजिए, ऊंचा देख अवास ।
काल्ह परों भुइं[1] लेटना, ऊपर जमसी घास ।।

कबिरा नौबति आपणीं, दिन दस लेहु बजाइ ।
ए पुर,[2] पट्टन,[3] ए गलीं, बहुरि न देखो आइ ।।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब ।
पल में परलै[4] होयगी, बहुरि करैगो कब्ब ।।

रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवाया खाय ।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।।

झूंठे सुख को सुख कहै, मानत है मन मोद[5] ।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद ।।

सब घट मेरा सांइयां, सूनी सेज न कोय ।
बलिहारी वा दास की, जा घट परगट होय ।।

जा घट में साईं बसै, सो क्यों छाना होय ।
जतन जतन करि दाबिये, तौ उजियारा सोय ।।

बांबी कूटैं बावरे, सांप न मारा जाय ।
मूरख बांबी ना डसै, सर्प सबन को खाय ।।

केसन[6] कहा बिगारिया, जो मूंडो सौ बार ।
मन को क्यों नहिं मूंडिये, जानें बिषै-बिकार[7] ।।

---

१. पृथ्वी २. नगर ३. शहर ४. प्रलय ५. हर्ष ६. बाल
७. विषय और बुराई

मूंड मुड़ाये हरि मिलैं, सब कोइ लेहि मुंड़ाय।
बार बार के मूंडने, भेड़ न बैकुंठ जाय॥

डाढ़ी मूंछ मुंडाइ कै, हूश्रा घोटम घोट।
मन को क्यों नहिं मूंडिये, जामें भरिया खोट[१]॥

चंदन की कुटकी भली, नहिं बबूल लखरांव।
साधुन की झुपड़ी भली, ना साकट[२] को गांव॥

साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
धन का भूखा जो फिरै, सो तो साधू नाहिं॥

नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम[३] नहिं शीतल होय।
कबिरा शीतल संत जन, राम सनेही सोय॥

सब बन तौ चंदन नहीं, सूरा[४] का दल नाहिं।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधू जग माहिं॥

सिंहों के लेहड़े[५] नहीं, हंसों की नहिं पांत।
लालों की नहिं बोरियां, साधु न चलें जमात॥

साधु बड़े परमारथी, घन ज्यों बरसैं श्राय।
तपन बुझावै और की, श्रपनो पारस[६] लाय॥

नीर पिलावत क्या फिरै, सायर[७] घर घर बारि।
जो तृषावंत[८] होइगा सो पीवैगा झख मारि॥

---

१. बुराई २. नीच ३. बरफ ४. शूर-वीर ५. झुंड
६. एक तरह का पत्थर, जिसके छूने से लोहा सोना बन जाता है।
७. सागर ८. प्यासा

जानता[1] बूझा नहीं, बूझि किया नहिं गौन[2] ।
अंधे को अंधा मिला, राह बतावै कौन ।।

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
सीस दिये जो गुरु मिलैं, तौ भी सस्ता जान ।।

कबिरा हरि के रूठते, गुरु के सरने[3] जाय ।
कह कबीर गुरु रूठते, हरि नहिं होत सहाय ।।

कबिरा ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और ।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर ।।

सात समंद की मसि[4] करूं, लेखन सब बनराइ ।
सब धरती कागद करूं, तऊ हरिगुण लिख्या न जाइ ।

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय ।।

सतगुरु सम को है सगा, साधू सम को दास ।
हरि समान को है हितू, हरिजन सम को जात ।।

नाम न रटा तो क्या हुआ, जो अंतर है हेत ।
पतिबरता पति को भजै, मुख से नाम न लेत ।।

पतिबरता मैली भली, गले कांच की पोत ।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि ससि की जोत[5] ।।

---

१. जानकार २. गमन ३. शरण ४. स्याही
५. प्रकाश

पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप ।
पतिबरता के रूप पर वारौं, कोटि सरूप ।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।

सहज मिलै सो दूध सम, मांगा मिलै सो पानि ।
कह कबीर वह रक्त[1] सम, जामें ऐंचा तानि[2] ।।

जो कछु आवे सहज में, सोई मीठा जान ।
कडुआ लागै नीम सा, जामें ऐंचा तान ।।

करनी बिन कथनी कथै, अज्ञानी दिन रात ।
कूकर ज्यों भूंकत फिरै, सुनी सुनाई बात ।।

लाया साखि[3] बनाय कर, इत उत अच्छर काट ।
कह कबीर कब लग जिये, जूठी पत्तल चाट ।।

कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोइ ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होइ ।।

सत्त नाम कडुआ लगै, मीठा लागै दाम ।
दुविधा में दोऊ गये, माया मिलो न राम ।।

जिन ढूंढ़ा तिन पाइया, गहरे पानी पैठि ।
मैं बपुरा[4] बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि ।।

---

१. खून २. खींचा तानी ३. दोहा ४. बेचारा

हीरा तहां न खोलिये, जहं खोटी है हाटि ।
कसकरि बांधो गाटरी, उठकरि चालो बाटि ।।

चलौ चलौ सब को कहै, मोहि अंदेसा और ।
साहेब सूं पर्चा नहिं, ए जाहिंगे किस ठौर ।।

साहेब तुम जनि बीसरो[1], लाख लोग लगि जाहिं ।
हमसे तुमरे बहुत हैं, तुम सम हमरे नाहिं ।।

क्या मुख लै बिनती करौं, लाज लगत है मोहिं ।
तुम देखत औगुन करौं, कैसे भावौं तोहिं ।।

परबत परबत मैं फिरो, नैन गंवायो रोय ।
सो बूटी पायो नहीं, जा ते जीवन होय ।।

कबिरा छुधा[2] है कूकरी[3], करत भजन में भंग ।
या को टुकड़ा डारि कै, सुमिरन करौ निसंक[4] ।।

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय ।।

प्रीतम को पतियां लिखूं, जो कहुं होय बिदेस ।
तन में मन में नैन में, ताको कहा संदेस ।।

पीया चाहे प्रेम रस, राखा चाहै मान ।
एक म्यान में दो खड़ग, देखा सुना न कान ।।

---

१. भुलाना २. भूख ३. कुतिया ४. निश्चिंत होकर

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान ।।

और कर्म सब भर्म है, भक्ति कर्म निष्कर्म ।
कहै कबीर पुकारि कै, भक्ति करो तजि कर्म ।।

जल ज्यों प्यारा माछरो[१], लोभी प्यारा दाम ।
माता प्यारा बाल का, भक्त पियारा राम ।।

कामी क्रोधी लालची, इनतैं भक्ति न होय ।
भक्ति करै कोइ सूरमा, जाति बरन[२] कुल खोय ।।

खेत बिगाड़यो खरतुआ सभा बिगाड़ी कूर[३] ।
भक्ति बिगाड़ी लालची, ज्यों केसर में धूर ।।

साधू ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय ।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ।।

तेरा सांई तुज्झ में, ज्यों पुहुपन[४] में बास ।
कस्तूरी का मिरग[५] ज्यों, फिर फिर ढूंढ़ै घास ।।

चार भुजा के भजन में, भूलि परे सब संत ।
कबिरा सुमरै तासु को, जाके भुजा अनंत ।।

माला फेरत जुग भया, मिटा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका[६] फेर ।।

---

१. मछली   २. जाति-वर्ण   ३. दुष्ट
४. फूल   ५. हिरन   ६. मोती

औगुन कहौं शराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय।
मानुष को पसुआ[1] करै, द्रव्य गांठि का देय॥

पाहन[2] पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजौं पहार[3]।
तातैं ये चाकी भली, पीस खाय संसार॥

कांकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहिरा हुआ खुदाय[4]॥

प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैन देत हैं रोय॥

जल में बसै कमोदिनी, चंदा बसै अकास।
जो है जाको भावता, सो ताही के पास॥

साहिब तुमहि दयाल हौ, तुम लगि मेरी दौर।
जैसे काग जहाज को, सूझै और न ठौर॥

लाली मेरी लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि।
मनुवां तो दहुं दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥

कहा चुनावै मेड़ियां, लम्बी भीति उसारि।
घर तो साढ़े तीन हथ, घना तो पौने चारि॥

---

१. जानवर २. पत्थर ३. पहाड़ ४. खुदा

३२

: 90 Mts
30 Marks

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानि[illegible]
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७, [illegible]
४८. [illegible] मंदिर
४९. [illegible] जी का [illegible]सार-प्रवेश
[illegible] थे नेताजी
रामेश्वरम्
कब्रों का विलाप
रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना



सैंतीस नये पैसे